Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 5, Nov. 2012
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अभिभावकों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

उषा रानी , रामबीर शर्मा

रिसर्च स्कोलर, सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुनझुनु
असिस्टैंट प्रोफैसर, शिक्षण महाविद्यालय कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

सारांश :

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक शिक्षा को किसी न किसी रूप में ग्रहण करता है। शिक्षा वह प्रकाश है जो जीवन के समस्त अन्धकार को दूर कर व्यक्ति में पवित्र विचारों, संस्कारों, भावनाओं, निश्चित दृष्टिकोण और भावी विवेक को जन्म देता है। आज का युग विज्ञान का युग होने के कारण शिक्षा के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन नए–नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। चारों तरफ परिवर्तन की लहरें हिलौरें ले रही हैं।

प्रस्तावना :

पाठ्यक्रम शिक्षण विधियां, अधिगम स्तर, परीक्षा प्रणाली सभी में नवीन सुधारों का विस्फोट हो रहा है शिक्षा का कार्यक्षेत्र इतना व्यापक है कि इसके अन्तर्गत वे सभी कार्य उग जाते हैं जिनको पूरा करने से व्यक्ति अपने जीवन को सुखी तथा सफल बनाने के योग्य बन जाता है। शिक्षा मानवीय जीवन को वातावरण से अनुकूलन कने तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते हुए भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करके चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर तथा साहसी उत्तम नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर उसका सर्वागींण विकास करती है। परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। सृष्ठि का कण–कण इस नियम से बंधा है। अतः आदिकाल से लेकर आज तक शिक्षा व उसके जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में देश, काल व परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन की लहरें आती–जाती रही है। इसी सुधार की एक कड़ी है। हरियाणा में माध्यमिक विद्यालयों के लिए लागू सैमेस्टर प्रणाली।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अनुसरण करते हुए परीक्षाओं को उन्नत करने के लिए तथा शिक्षण और अधिगम के स्तर को विकसित करने का प्रमाणिक एवं विश्वसनीय उपक्रम बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप 2005 की अपेक्षाओं के अनुरूप परीक्षाओं में लचीलापन लाने के निमित हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने 2 मार्च 2006 को निम्न सुधारों को एक साथ लागू करने का निर्णय लिया। शट्मासिक सत्र प्रणाली (सैमेस्टर प्रणाली) सापेक्ष श्रेणीकरण (रिलेटिव ग्रेडिंग) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.)।

पूरे भारतवर्ष के विद्यालयों में शिक्षा के परिदृष्य पर सैमेस्टर प्रणाली काफी समय से चर्चा का विषय रही है। पूरे भारतवर्ष के 42 विद्यालयी शिक्षा बोर्ड में हरियाणा विद्यालयी शिक्षा बोर्डों ने पहल की है। अप्रैल 2006 में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने इसे संस्थागत रूप दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा जगत में सर्वमान्य प्रतिमान होने के बाजवूद भी सैमेस्टर प्रणाली को सभी विद्यालयी बोर्डों ने नहीं अपनाया। सबसे पहले केवल एकमात्र हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने इसे अपने यहां माध्यमिक स्कूलों में लागू किया है। क्या सैमेस्टर प्रणाली वास्तव में एक सफल, विशिष्ट, तथा उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। कोशीय अर्थ के रूप में सैमेस्टर का अर्थ अर्धवार्शिक है तथा शिक्षा में इसकी अवधारणा शट्मासिक पाठ्यक्रमों के रूप में है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के संदर्भ में सत्र प्रणाली का पाठ्यक्रम आधे–आधे वर्ष का है जिसके लिये अलग से परीक्षा आयोजित की जाती है तथा प्रथम सैमेस्टर की परीक्षा का सारांश 40 प्रतिशत तथा दूसरे सैमेस्टर की परीक्षा का सारांश 60 प्रति रखा गया है।

शोध के उद्देश्य :

1. शहरी विद्यार्थियों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
2. शहरी अध्यापकों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
3. शहरी अभिभावकों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
4. ग्रामीण विद्यार्थियों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
5. ग्रामीण अध्यापकों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
6. ग्रामीण अभिभावकों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
7. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन।
8. शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन।
9. शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों का सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन।

सैमेस्टर प्रणाली का कैलेण्डर

प्रथम सत्र (पहला सैमेस्टर) : अप्रैल 1 से 30 सितम्बर तक
ग्रीष्मावकाश : 1 जून से 30 जून तक

DSpace™

प्रथम सत्रीय परीक्षा : अगस्त
द्वितीय सत्रीय परीक्षा : 1 सितम्बर से फरवरी मार्च

जान डब्ल्यू वेस्ट के अनुसार –

'व्यावहारिक रूप में सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों और पुस्तकालयों में मिल सकता है। अन्य प्राणियों से भिन्न मानव को अतीत से प्राप्त ज्ञान को प्रत्येक पीढ़ी के साथ नये ज्ञान के रूप में प्रारम्भ करना चाहिये। ज्ञान के विस्तृत भण्डार में उसका निरन्तर योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा दिए गए प्रयासों की सफलता को सम्भव बनाता है। सर्वेक्षण और प्रायोगिक शोध में साहित्य की समीक्षा तथ्यों को एकत्र करके पहले से तैयार किये गये कार्यों की विभिन्नता को प्रदान करता है। इन शोध विधियों में साहित्य का पुनर्निरीक्षण, नये–नये विषयों में एकत्र किये गये तथ्यों से किये जाने वाले अध्ययनों के अतीत से प्राप्त सन्दर्भों को जानने के लिये किया जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता

सैमेस्टर प्रणाली को केवल अभी तक हरियाणा विद्यालय, शिक्षा बोर्ड ने अपनाया है। कक्षा छठी से बारहवीं तक की कक्षाओं में सैमेस्टर प्रणाली लागू की है। शिक्षा में समय–समय विकास के लिए विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं के अध्ययन के लिए परीक्षाओं को उन्नत करने के लिये तथा शिक्षण और अधिगम के स्तर का विकसित करने के लिए कई समितियों, आयामों, योजनाओं का गठन कियागया है। इन सबके फलस्वरूप एवं दूरगामी सुझाव उभर कर आए हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण सुझाव था–भारत में माध्यमिक शिक्षा में सैमेस्टर प्रणाली का प्रचलन, इस प्रणाली के तहत तो उद्देश्य निर्धारित किए गए थे। वे कहां तक सफल हुए हैं, इसी को जानने के उद्देश्य से समस्या का चयन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत न्यायदर्श में 50 ग्रामीण छात्र व 50 शहरी छात्र, 50 ग्रामीण अध्यापक व 50 शहरी अध्यापक, 50 ग्रामीण अभिभावक एवं 50 शहरी अभिभावकों के अनुसंधानकर्ता शोध हुए उपकरण का प्रशासन किसी निश्चित समूह से अध्ययन के लिए करता है। संपूर्ण समष्टि का मूल्यांकन समय और लागत की कठिनाईयों के न्यादर्श का चयन किया गया है।

आंकड़ो का संकलन

शोधकर्ता ने आंकड़ो को एकत्रित करने के लिए अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के लिए अलग–अलग प्रश्नावली बनाई तथा न्यादर्श को देखते हुए विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के अंतर्गत अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के दृष्टिकोण का सर्वेक्षण किया। अनुसंधानकर्ता ने विभिन्न विद्यालयों में जाकर सर्व प्रथम मुख्याध्यापक, प्रधानाचार्य को अपना परिचय दिया तथा उनके सहयोग से अध्यापकों को प्रश्नावली वितरित करने के पश्चात् उन्हें स्पष्ट तथा सही–सही जानकारी देने का आग्रह किया तथा साथ ही उन्हें बताया गया कि यह जानकारी केवल शोधकार्य के लिए एकत्रित की जा रही है जिसे हर प्रकार से गुप्त रखा जाएगा। विद्यार्थियों से प्रश्नावली शोधकर्ता ने स्वयं भरवाई तथा अभिभावकों से संपर्क करके उनसे भी प्रश्नावली स्वयं भरवाई।

उपकरणों का प्रयोग

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता ने स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है जिससे आंकड़ो का संकलन सरलता से हो सके। प्रश्नावली का निर्माण इस प्रकार से किया गया है कि उससे पर्याप्त उपयुक्त जानकारी हासिल हो सके। समस्या का विस्तृत अध्ययन करने के लिए प्रश्नावली के तीन अलग–2 वर्ग बनाए गए हैं जो इस प्रकार है :–

1.सैमेस्टर प्रणाली के प्रति शहरी व ग्रामीण अध्यापकों–मुख्याध्यापकों का दृष्टिकोण जानने हेतु प्रश्नावली।
2.सैमेस्टर प्रणाली के प्रति शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों का दृष्टिकोण जानने हेतु प्रश्नावली।
3.सैमेस्टर प्रणाली के प्रति शहरी व ग्रामीण अभिभावकों का दृष्टिकोण जानने हेतु प्रश्नावली।

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या

अनुसंधान सामग्री के संकलन तथा वर्गीकरण के पश्चात् उससे महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले गए। प्राप्त आकड़ो का सारणीकरण किया गया, जिससे आकड़ों में क्रमबद्धता, सरलता एवं स्पष्टता आ सके। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा माध्यमिक विद्यालयों में सैमेस्टर प्रणाली शुरू किए जाने प्रति हरियाणा राज्य थानेसर ब्लाक के विद्यार्थियों, अध्यापकों एवम् अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। आकड़ो का विश्लेषण एवम् व्याख्या तीन भागों में बाटी गयी है जो इस प्रकार हैं ।

समैस्टर प्रणाली के प्रति शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों का दृष्टिकोण

समैस्टर प्रणाली से पाठ्यक्रम का दबाव कम हो रहा है। 54 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 46 प्रतिशत ने अहसमति व्यक्त की है और शहरी विद्यार्थियों ने 84 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 16 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से पाठ्यक्रम की तैयारी करनी सरल हो गयी है। 58 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 42 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और 82 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की व 18 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। समैस्टर प्रणाली से पाठ्यक्रम का गहनता से अध्ययन करना 60 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 40 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 78 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 22 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। समैस्टर प्रणाली से पाठ्यक्रम का सतत् अध्ययन करने में रूचि ले रहे हैं, 50 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 50 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 10 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। समैस्टर प्रणाली से परीक्षा तनाव कम हो रहा है 58 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 42

DSpace™

प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 92 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 8 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। समैस्टर प्रणाली से परीक्षाओं में अनुचित साधनों का प्रयोग कम हो रहा है, 50 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 50 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 88 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 12 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। समैस्टर प्रणाली से परीक्षाओं में अनुचित परीक्षाओं का भय होना 60 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 40 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 84 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की। समैस्टर प्रणाली वार्शिक प्रणाली से बेहतर है 70 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की व 30 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 86 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से भविष्य की चयनीत एवं प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी में सुविधा हो रही है। 80 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की व 20 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 94 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से प्राप्तांक प्रतिशतता में वृद्धि हो रही है 90 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की व 10 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 96 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से परीक्षा–परिणामों के प्रति विद्यार्थियों में विश्वसनीयता की वृद्धि हो रही है। 74 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 26 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 96 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 4 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर में होने वाले यूनिट टैस्ट से आपको लाभ हो रहा है 62 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 38 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 92 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 8 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से विद्यार्थियों पर बढ़ता ट्यूशन का दबाव कम हो गया है 64 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 36 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 10 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से विद्यार्थियों को खेल तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए पर्याप्त समय मिला रहा है 46 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 54 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 76 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 24 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली भविश्य में सुचारू रूप से जारी रहनी चाहिए 50 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने सहमति व्यक्त की तथा 50 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी विद्यार्थियों ने 88 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 12 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की।

समैस्टर प्रणाली के प्रति शहरी व ग्रामीण अध्यापकों का दृष्टिकोण

समैस्टर प्रणाली को उचित व श्रेष्ठ मानते हैं 64 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 36 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 94 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 6 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली के तहत आंतरिक मूल्यांकन प्रक्रिया से छात्रों तथा आपके बीच तालमेल सीमित हो रहा है तथा आपके बीत तालमेल सीमित हो रहा है 60 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 40 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 94 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 6 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली के अन्तर्गत सतत् व्यापक मूल्यांकन का 10 प्रतिशत भारांश अध्यापकों की छात्र–निर्माण भूमिका को आधार प्रदान कर रहा है। 70 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने असहमति व्यक्त की व 30 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 84 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 16 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली के अन्तर्गत आप शिक्षण की और अधिक सम्पन्न करने के लिए नवीन प्रयास कर रहे हैं 66 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 34 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 94 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 6 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से विद्यालय में अनुशासन का माहौल उत्पन्न हो रहा है 78 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 22 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 96 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की तथा 4 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से आप द्वारा सतत् कार्य करने की आवश्यकता और अपेक्षा बनी रहती है 68 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 32 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 98 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 2 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। आपको छात्रों की सामर्थ्य और दुर्बलता के मूल्यांकन के लिए अच्छे अवसर उपलब्ध हो रहे हैं 58 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 42 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 86 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 14 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से आपके कार्यभार में वृद्धि हो रही है 70 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 30 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 80 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 20 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली ने अध्यापकों के पास निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए पर्याप्त समय होता है 56 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 44 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 90 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 10 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली में पाठ्यतर गतिविधियों में आपकी भूमिका में वृद्धि हुई है 58 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 42 प्रतिशत ने अहसमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 86 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 14 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। छात्रहित से अधिक व ठोस सुधारात्मक कार्यक्रम लागू करने में सुगमता हो रही है 60 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 40 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 88 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 12 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। आप पाठ्यक्रम को पूरा तैयार करवाते हैं 74 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 26 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों 98 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 2 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली भविश्य में जारी रहनी चाहिए 62 प्रतिशत ग्रामीण अध्यापकों ने सहमति व्यक्त की व 38 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अध्यापकों ने 98 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 2 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की।

सैमेस्टर प्रणाली के प्रति शहरी व ग्रामीण अभिभावकों का दृश्टिकोण

सैमेस्टर प्रणाली को बच्चों के लिये हितकारी मानते हैं 56 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 44 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों 80 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 20 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की व 20 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। वे महत्वाकांक्षाएं जो आपने बच्चों से लगा रखी हैं पूरी हो सकेंगी 60 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 40 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों 90 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 10 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। बच्चों को भविश्य की चयनीय व प्रवेश परीक्षा की तैयारी में सहायता मिल रही है 66 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 34 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों 94 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 6 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से छात्र पाठ्यक्रम को सरलता से तैयार कर रहे हैं 70 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 30 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों 88 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 12 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। बच्चों कें व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो पा रहा है। 74 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 26 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों ने 92 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 8 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। बच्चों का परीक्षा सम्बन्धी तनाव कम हो रहा है 80 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 20 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों ने 94 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 6 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। छात्र घर पर सतत् अध्ययन में व्यक्त रहते हैं 82 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 18 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों ने 94 प्रतिशत सहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली से योग्यताएं उत्तरोत्तर बढ़ रही है। 76 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 24 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों ने 92 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 8 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की।

DSpace™

छात्रों का मानसिक विकास उचित दिशा में हो रहा है 72 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 28 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों ने 96 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 4 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की। सैमेस्टर प्रणाली भविष्य में जारी रहना चाहिए। 70 प्रतिशत ग्रामीण अभिभावकों ने सहमति व्यक्त की व 30 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की और शहरी अभिभावकों ने 98 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की व 2 प्रतिशत ने असहमति व्यक्त की।

सुझाव

1.अधिकतर विद्यार्थियों ने सैमेस्टर प्रणाली चलाए जाने का समर्थन किया है परन्तु शहरी विद्यार्थियों की संख्या अधिक है और ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या कम है। फिर भी प्राप्त प्रतिशतता में वृद्धि हुई है और ऐसा प्रतीत होता है कि विद्यार्थियों पर पढ़ाई का दवाब कम है। अतः सरकार को सैमेस्टर प्रणाली प्रभावशाली ढंग से लागू करनी चाहिए।

2.अधिकतर संख्या में अध्यापकों ने भी सैमेस्टर प्रणाली के पक्ष में अपनी बात कही है। शहरी अध्यापकों के आंकड़े ग्रामीण अध्यापकों के आंकड़ों से अधिक है। परन्तु फिर भी उनका उनका मानना है कि सैमेस्टर प्रणाली से सतत् कार्य करने की आवश्यकता बनी रहती है तथा छात्रों की सामर्थ्य और दुर्बलता के मूल्यांकन के लिए अच्छे अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। अतः सरकार द्वारा सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया का स्तर, सरल एवं औचित्यपूर्ण व पूर्ण बनाए जाने का प्रयास किया जाना चाहिये।

3.प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह भी निष्कर्ष निकलता है कि इस प्रणाली से अभिभावकों में भी उत्साह है। शहरी अभिभावकों के आंकड़े ग्रामीण अभिभावकों के आंकड़े अधिक हैं फिर भी उनका यही मानना है कि उनकी आशाओं के अनुरुप कार्य हो रहा है। ग्रामीण अभिभावकों के आंकड़े शहरी अभिभावकों से इसलिए कम हैं क्योंकि इस प्रणाली से विद्यार्थी व्यक्त रहते हैं तथा अपने घर के कामकाज में हाथ नहीं बंटवा पाते। इसके लिय परीक्षाएं समयानुसार होनी चाहिए तथा संतुलन बना रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.सक्सेना एन.आर. स्वरुप (2001)	शिक्षा के दार्शनिक एवम् समाजशास्त्रीय सिद्धान्त आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
2.शर्मा आर.ए. (1998)	शिक्षा अनुसंधान आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ।
3.गुप्ता एस.पी. (1987)	सांख्यिकी के सिद्धान्त सुल्तान चंद एवम् पुत्र नई दिल्ली।
4.सुखिया एवं मेहरोत्रा (1990)	शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व गोविन्द पॉकेट बुक्स, आगरा।
5.वशिष्ठ के.के. एवं शर्मा डी.एल. (1998)	आधुनिक भारतीय शिक्षा आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
6.शुक्ला पी.डी. (1998)	भारत में नई शिक्षा नीति।
7.हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी।	शट–मासिक सत्र योजना। पेज 1 से 16
8.हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी	शिक्षालोक

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net